International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 08-11-2025, Accepted: 07-12-2025, Published: 22-12-2025
Volume 11, Issue 4, 2025, Page No. 148-149

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला': छायावादी चेतना और क्रांतिकारी मानस के कवि

प्रभात मिश्रा
शोध छात्र, हिन्दी विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
हिन्दी साहित्य के छायावादी युग में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' एक ऐसी विलक्षण प्रतिभा के रूप में उभरे जिन्होंने परम्परा और आधुनिकता, रहस्यवाद और यथार्थवाद, भक्ति और विद्रोह के बीच एक सुन्दर सामंजस्य स्थापित किया। उनकी काव्य–सृष्टि में जहाँ एक ओर छायावादी कोमलता और प्रकृति के माधुर्य का चित्रण है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक विषमता और शोषण के प्रति तीव्र आक्रोश और क्रांति का स्वर भी मुखरित हुआ है। यह अद्वितीय समन्वय ही निराला को उनके समकालीन कवियों से एक विशिष्ट पहचान प्रदान करता है।

मूल शब्दः निराला, छायावाद, क्रांति, रहस्यभावना, सामाजिक यथार्थ, मुक्तछंद, प्रगतिवाद

प्रस्तावना

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी साहित्य के छायावाद के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक माने जाते हैं। किन्तु उनका व्यक्तित्व और कृतित्व इतना विराट और बहुआयामी है कि उन्हें किसी एक वाद या विचारधारा की सीमा में बाँधना असंभव है। निराला जी ने कविता, उपन्यास, कहानी, निबंध, आलोचना आदि विभिन्न विधाओं में अपनी अमिट छाप छोड़ी। 'राम की शक्ति–पूजा', 'सरोज–स्मृति', 'जूही की कली', 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी उनकी रचनाएँ हिन्दी साहित्य की अमर निधि हैं।

डॉ. नगेन्द्र ने निराला के काव्य के संदर्भ में लिखा है, "निराला की कविता एक ओर जहाँ आत्मा की गहन अनुभूतियों का संगीत है, वहीं दूसरी ओर युग–यथार्थ का प्रखर स्वर भी है। उनमें एक साथ अतीत की सांस्कृतिक चेतना और वर्तमान की सामाजिक चेतना का समन्वय दिखाई देता है।"[1]

यह कथन निराला की सर्जनात्मकता की बहुलता को स्पष्ट करता है। निराला के काव्य–विकास को हम तीन प्रमुख चरणों में देख सकते हैं–

1. छायावादी चेतना का चरण (1920–1935)
2. यथार्थ और क्रांति का चरण (1935–1945)
3. दार्शनिक और रहस्यवादी चेतना का उत्तर चरण (1945 के बाद)

1. छायावादी चेतना का चरण

इस चरण में निराला ने 'जूही की कली', 'वन–बेला' जैसी रचनाएँ लिखीं, जिनमें प्रकृति का मनोहारी चित्रण, रहस्यानुभूति और कोमल श्रृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति हुई है। इन रचनाओं में छायावादी संवेदनशीलता स्पष्ट परिलक्षित होती है। किन्तु निराला का छायावाद प्रसाद, पंत और महादेवी के छायावाद से भिन्न है। उनमें एक अदम्य जीवन–दर्शन और आंतरिक आवेग विद्यमान है, जैसा कि 'राम की शक्ति–पूजा' में देखने को मिलता है। इस खण्डकाव्य में निराला ने पौराणिक आख्यान को एक नवीन दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक अर्थ प्रदान किया है।

2. यथार्थ और क्रांति का चरण

जीवन के कठोर यथार्थ, व्यक्तिगत कष्टों और राष्ट्रीय–सामाजिक परिस्थितियों ने निराला के काव्य में एक क्रांतिकारी मोड़ ला दिया। इस चरण में उन्होंने शोषित, पीड़ित और सामान्य जन के जीवन को अपनी कविता का विषय बनाया। 'वह तोड़ती पत्थर', 'कुक्कुरमुत्ता', 'भिक्षुक' जैसी कविताएँ इसी दौर की उत्पत्ति हैं। इन कविताओं में वह सामाजिक विषमता के प्रति तीखा व्यंग्य और विद्रोह का स्वर मुखर हुआ है। उन्होंने मुक्तछंद को अपनाकर काव्य–अभिव्यक्ति को एक नई लय और गति प्रदान की।

3. दार्शनिक और रहस्यवादी चेतना का उत्तर चरण

जीवन के अंतिम दिनों में निराला का काव्य पुनः अध्यात्म और रहस्य की ओर उन्मुख हुआ, किन्तु यह रहस्यवाद पलायनवादी न होकर जीवन के प्रति गहन आस्था से युक्त है। 'अनामिका' और 'अर्चना' जैसे संग्रहों की कविताएँ जीवन–मृत्यु, ईश्वर और आत्मा के शाश्वत प्रश्नों से जूझती हुई प्रतीत होती हैं। इस चरण की कविताओं में एक गंभीर दार्शनिकता और अनुभूति की परिपक्वता देखने को मिलती है।

निराला ने हिन्दी गद्य को भी समृद्ध किया। उनके उपन्यास 'अलका', 'अप्सरा', 'प्रभावती' और कहानी–संग्रह 'लिली' ने हिन्दी fiction को नए आयाम दिए। उनकी आत्मकथा 'कुल्ली भाट' हिन्दी की श्रेष्ठतम आत्मकथाओं में गिनी जाती है। उनकी आलोचनात्मक कृति 'प्रबंध–प्रतिभा' और 'रवीन्द्र–कविता–कानन' उनकी सूक्ष्म समीक्षा–दृष्टि का परिचय देती हैं।

निराला का सम्पूर्ण साहित्य एक ऐसे संघर्षशील योद्धा की आत्मगाथा है जो जीवन भर परम्परा और आधुनिकता, समर्पण और विद्रोह, व्यक्तिगत दुःख और सामाजिक सरोकार के बीच संघर्ष करता रहा। उनकी रचनाधर्मिता पर डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का कथन उल्लेखनीय है– "निराला हिन्दी के पहले सच्चे आधुनिक कवि हैं। उन्होंने न केवल भाषा और छंद को मुक्त किया, बल्कि मनुष्य की मुक्ति के लिए भी आजीवन संघर्ष किया।"[2]

निष्कर्ष

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हिन्दी साहित्य के एक ऐसे ध्रुवतारे हैं जिनकी प्रासंगिकता आज भी उतनी ही अक्षुण्ण है। वे केवल एक साहित्यकार ही नहीं, एक सम्पूर्ण मानवतावादी चिंतक और समाज–सुधारक भी थे। उनकी रचनाएँ पाठक को न केवल सौंदर्यबोध का आनंद देती हैं, बल्कि जीवन के प्रति एक दृष्टि और संघर्ष का साहस भी प्रदान करती हैं। हिन्दी साहित्य का यह महान स्तम्भ सदैव प्रेरणा का स्रोत बना रहेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. द्विवेदी, हजारी प्रसाद. (1955). निराला की साहित्य साधना. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
2. नगेन्द्र. (1972). छायावाद की पुनर्व्याख्या. दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
3. त्रिपाठी, निराला सूर्यकान्त. (2000). निराला–रचनावली (खण्ड 1–8). इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
4. राय, रामविलास शर्मा. (1987). निराला की साहित्य साधना (भाग–1 व 2). नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
5. गुप्त, माता प्रसाद. (1995). निराला: आधुनिकता और परम्परा. इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।